مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH

Hazrate Sari Saqati(Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 316
Weekly Booklet : 316

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिया के
बुज़ुर्ग का तज़्किरा बनाम ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के फ़रामीन

इर्शादाते ह़ज़रते

رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

सरी सक़त़ी

सफ़ह़ात 18

• एक बुज़ुर्ग की नसीह़त 02
• बेटे को पोलीस ने छोड़ दिया (ह़िकायत) 03
• रोज़ाना एक हज़ार नफ़्ल (ह़िकायत) 05
• इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़त़ी 07

पेशकश :

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़त़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
सिने त़बाअ़त	:	सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1445** हि., सितम्बर **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़ती** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 15 सफ़ह़ात का रिसाला बनाम : **"इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़त़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه**"** पढ़ या सुन ले उसे बुरे ख़ातिमे से बचा और उस की, उस के मां बाप की, सारे ख़ानदान की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबुल मुज़फ़्फ़र मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़य्याम समर क़न्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साह़िब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ ।" मैं उन के साथ हो लिया । मुझे गुमान हुवा कि येह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام हैं । मेरे इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम ख़िज़्र बताया, उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह इल्यास (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं । मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़मत फ़रमाए, क्या आप दोनों ह़ज़रात ने नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां । मैं ने अ़र्ज़ की : आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इर्शादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं । उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इसी त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से कपड़ा पाक किया जाता है । नीज़ जो शख़्स

“صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد” पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रहमत के 70 दरवाज़े खोल लेता है। (القول البدیع، ص277، جذب القلوب، ص235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

एक बुज़ुर्ग की नसीहत

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं चालीस साल तक **अल्लाह** पाक से येह दुआ़ करता रहा कि वोह मुझे अपना कोई कामिल वली दिखा दे, ऐ काश ! मैं उस के सच्चे आ़शिक़ की एक झलक देख लूं, एक मरतबा मैं “लुकाम” की पहाड़ियों में था, वहां एक जगह मैं ने बहुत से मरीज़ों को जम्अ़ देखा। मैं ने उन से पूछा : “तुम लोग यहां क्यूं जम्अ़ हो ?” उन्हों ने कहा : “महीने में एक मरतबा यहां **अल्लाह** पाक के एक नेक बन्दे आते हैं, वोह हम जैसे मरीज़ों के लिये दुआ़ करते हैं और उन की दुआ़ की बरकत से मरीज़ फ़ौरन तन्दुरुस्त हो जाते हैं, आज उन के आने का दिन है, बस वोह आने वाले ही होंगे, अभी हम येह बातें कर ही रहे थे कि एक नूरानी चेहरे वाले शख़्स हमारी त़रफ़ आए, फिर उन्हों ने कुछ पढ़ा और सब मरीज़ों पर दम किया, फ़ौरन सारे मरीज़ तन्दुरुस्त हो गए। फिर वोह मर्दे सालेह़ वहां से उठ कर वापस जाने लगे तो मैं भी उन के पीछे हो लिया और अ़र्ज़ की : “ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! कुछ देर के लिये ठहर जाएं, मैं आप से कुछ बातें करना चाहता हूं।”

वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगे : “ऐ सरी सक़ती ! **अल्लाह** पाक के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो, हर वक़्त उसी की याद में मगन रहो, किसी और से उम्मीद ही मत लगाओ, वरना ख़त़रा है कि कहीं तुम उस की बारगाह में ग़ैर मक़्बूल न हो जाओ। लिहाज़ा

उस के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो।" इतना कहने के बा'द वोह जिस सम्त से आए थे उसी त़रफ़ चले गए। (عیون الحکایات، ص201)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते सरी सक़त़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को उन बुज़ुर्ग ने कैसी ज़बर दस्त नसीह़त फ़रमाई कि **अल्लाह** पाक के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह न होना और हर वक़्त उसी की याद में मश्ग़ूल रहना वरना उस की बारगाह में मक़्बूल नहीं हो सकोगे।

ह़ज़रते सरी सक़त़ी का तआ़रुफ़

शैख़ुल इस्लाम अबुल ह़सन ह़ज़रते सरी बिन मुग़ल्लिस सक़त़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मुरीद और ह़ज़रते जुनैदे बग़दाद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के उस्ताद और मामूं थे। (تذکرۃ الاولیاء، 1/246)

आप का पेशा

आप इब्तिदा में "सक़त़ (या'नी मा'मूली और छोटी मोटी चीज़ें)" बेचते थे। (تذکرۃ الاولیاء، 1/246) इसी मुनासबत से आप को "सक़त़ी" कहा जाता है। मन्क़ूल है कि आप माल ख़रीदते और बेचते थे और हर दस दीनार के माल पर सिर्फ़ आधा दीनार नफ़्अ़ रखते थे, इस से ज़ियादा नफ़्अ़ अगर कोई देता भी तो नहीं लेते थे।

बेटे को पोलीस ने छोड़ दिया (ह़िकायत)

ह़ज़रते अबुल ह़सन सरी सक़त़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमते बा बरकत में आप की पड़ोसन ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ अबुल ह़सन ! रात मेरे

बेटे को सिपाही पकड़ कर ले गए हैं शायद वोह उसे तक्लीफ़ पहुंचाएं, बराहे करम ! मेरे बेटे की सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये या किसी को मेरे साथ भेज दीजिये । पड़ोसन की फ़रियाद सुन कर आप खड़े हो कर ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए । जब काफ़ी देर हो गई तो उस औरत ने कहा : ऐ अबुल ह़सन ! जल्दी कीजिये ! कहीं ऐसा न हो कि ह़ाकिम मेरे बेटे को क़ैद में डाल दे ! आप नमाज़ में मश्ग़ूल रहे, फिर सलाम फेरने के बा'द फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** पाक की बन्दी ! मैं तेरा मुआ़मला ही तो ह़ल कर रहा हूं ।" अभी येह गुफ़्त्गू हो ही रही थी कि उस पड़ोसन की ख़ादिमा आई और कहने लगी : बीबी जी ! घर चलिये ! आप का बेटा घर आ गया है । येह सुन कर वोह पड़ोसन बहुत ख़ुश हुई और आप को दुआ़एं देती हुई वहां से रुख़्सत हो गई । (عیون الحکایات ص164 ملخصاً)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़िफ़रत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

क़ैदियो ! चाहो बराअत, तुम पढ़ो दिल से नमाज़ दूर हो जाएगी आफ़त, तुम पढ़ो दिल से नमाज़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صلَّی اللہُ علٰی محمَّد

सब की मग़िफ़रत (ह़िकायत)

एक शख़्स आप के जनाज़े में शरीक हुवा, रात उस ने आप को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللہُ بِک या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ? फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक होने वालों की मग़िफ़रत फ़रमा दी । उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं भी आप के जनाज़े में शरीक था । आप ने एक काग़ज़ निकाल कर उस में देखा, लेकिन उस का नाम नज़र न आया, उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं

यक़ीनन ह़ाज़िर हुवा था, आप ने दोबारा नज़र की तो उस का नाम ह़ाशिये में लिखा हुवा देखा। (تاریخِ دمشق، 20/198)

रोज़ाना एक हज़ार नफ़्ल

आप ने अपनी दुकान में एक पर्दा लगाया हुवा था जिस के पीछे तशरीफ़ ले जा कर रोज़ाना एक हज़ार नफ़्ल पढ़ते थे। (تذکرۃ الاولیاء، 1/ 246)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! इस ह़िकायत में उन ताजिरों और मुलाज़िमों के लिये सीखने का बेहतरीन मदनी फूल मौजूद है जो अपने फ़ारिग़ अवक़ात ख़ुश गप्पियों, फ़ुज़ूल बातों और मोबाइल के ग़लत़ इस्ति'माल (Miss Use) में गुज़ार देते हैं और बा'ज़ जमाअ़त तो जमाअ़त नमाज़ भी छोड़ देते हैं। अपनी ज़िन्दगी के अनमोल लम्ह़ात बे मक़्सद कामों में बरबाद होने से बचाइये और फ़ुरसत की घड़ियों को ग़नीमत जान कर जितना हो सके दुरूदे पाक, तस्बीह़ात वग़ैरा ज़िक्रो अज़्कार से अपनी ज़बान को तर रखिये। अगर कुछ पढ़ने के बजाए ख़ामोश रहने को जी चाहे तो इस में भी सवाब कमाने की सूरतें हैं, मसलन इ़ल्मे दीन की बात में ग़ौरो फ़िक्र शुरूअ़ कर दीजिये, या मौत के झटकों, क़ब्र की तन्हाइयों, उस की वह़्शतों और मह़्शर की होलनाकियों की सोच में डूब जाइये, इस त़रह़ वक़्त ज़ाएअ़ नहीं होगा बल्कि एक एक सांस इ़बादत में शुमार होगा। اِنْ شَآءَ الله

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने औलिया ! अल्लाह पाक के औलियाए किराम का येह त़रीक़ा रहा है कि वोह लोगों को वा'ज़ो नसीह़त के ज़रीए़ बहुत से मदनी फूल पेश करते रहते हैं, यक़ीनन इन्ही नेक हस्तियों ने इस्लामी ता'लीमात

को दुन्या के कोने कोने में आ़म करने में बड़ा अहम किरदार अदा किया। येह बुज़ुर्गाने दीन बा'ज़ अवक़ात ख़ुद लोगों के पास जा कर उन की इस्लाह़ व तरबियत फ़रमाते और कभी लोग इन की सोह़बत से फ़ैज़ पाने के लिये इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर इन के इर्शादात सुनते और अपनी इस्लाह़ का सामान करते थे। याद रहे ! **अल्लाह** वालों के इन अक़्वाल में क़ुरआने करीम की आयाते मुबारका और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका का ख़ुलासा होता है, इन की ज़िन्दगी के तजरिबात और मुशाहदात होते हैं, इन की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ में वोह तासीर होती है कि बे नमाज़ियों को नमाज़ की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इ़ल्म की और फ़ासिक़ों को तक़्वे की दौलत नसीब हो जाती है।

बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : (1) अगर किसी को शैख़े कामिल न मिले तो वोह अहले सुलूक (औलियाए किराम) की किताब का मुत़ालआ़ करे और उस पर चले। (راحت القلوب، ص15) (2) मह़बूबे इलाही ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज़रते ख़्वाजा अमीर ह़सन अ़ला सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : मशाइख़ की किताब और इशारात जो सुलूक के बाब में फ़रमाएं वोह मुत़ालए़ में रखनी चाहिएं। (فوائد الفواد، مجلس بست و ہشتم، ص49) (3) मह़बूबे इलाही ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दामन से वाबस्ता हुवा तो मैं ने इरादा किया कि जो कुछ आप की ज़बान से सुनूंगा वोह लिख लिया करूंगा लिहाज़ा जो कुछ मैं बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से सुनता लिख लिया करता, जब अपनी

क़ियाम गाह पर आता तो किताब में लिख लेता इस के बा'द भी जो कुछ सुनता लिख लेता ह़त्ता कि मैं ने येह बात बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को बता दी। उस के बा'द बाबा फ़रीद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه जब भी कोई ह़िकायत या इर्शाद फ़रमाते तो मुझे ह़ाज़िर होने का हुक्म फ़रमाते और अगर मैं ताख़ीर से आता तो वोह बात दोबारा दोहरा देते। (فوائد الفواد، مجلس بست و ہشتم، ص49)

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने भी वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को अपनी मजलिसे वा'ज़ में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल इर्शाद फ़रमाए हैं, आइये ! उन में से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के कुछ फ़रामीन मुलाह़ज़ा कीजिये :

इर्शादाते ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

﴾1﴿ जिस ने **अल्लाह** से मह़ब्बत की वोह ज़िन्दए जावेद हुवा (या'नी उस का ज़िक्र लोगों के दिलों में हमेशा रहेगा) और जिस ने दुन्या से मह़ब्बत की वोह रुस्वा हुवा। (مکاشفۃ القلوب، ص264)

﴾2﴿ बे वुक़ूफ़ सुब्ह़ो शाम ज़िल्लतो रुस्वाई से बसर करता है और अ़क़्ल मन्द अपने उ़यूब तलाश करता रहता है। (مکاشفۃ القلوب، ص264)

﴾3﴿ आख़िरत के त़लब गार के चन्द त़रीक़े : ❀ नवाफ़िल के ज़रीए़ **अल्लाह** पाक का मह़बूब होना ❀ क़ुरआने पाक (की याद) से दिल लगाना ❀ अह़कामे इलाही पर क़ाइम रहना ❀ **अल्लाह** पाक के हुक्म को तरजीह़ देना ❀ उस के देखने से ह़या करना (या'नी वोह मुझे हर वक़्त देख रहा है) ❀ उस की पसन्द में पूरी कोशिश लगा देना ❀ थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी रहना ❀ गुमनामी पर क़नाअ़त करना। (حلیۃ الاولیاء، 10/121، رقم:14703)

﴾4﴿ येह पांच चीज़ें जिस में हों वोह बड़ा बहादुर है : ❀ **अल्लाह** पाक के

हुक्म पर ऐसी इस्तिक़ामत जिस में हेरफेर न हो ❀ ऐसी कोशिश जिस के साथ भूल न हो ❀ ऐसी बेदारी जिस के साथ ग़फ़्लत न हो ❀ तन्हाई और लोगों के सामने भी ऐसा मुराक़बए इलाही (**अल्लाह** पाक की त़रफ़ ऐसी तवज्जोह) हो जिस के साथ रियाकारी न हो और ❀ मौत की याद के साथ उस की तय्यारी भी हो। (حلیۃ الاولیاء، 10/121، رقم:14702)

﴾5﴿ मैं ऐसा रास्ता जानता हूं जो सीधा जन्नत की त़रफ़ ले जाए। पूछा गया : अबुल ह़सन ! वोह कौन सा रास्ता है ? फ़रमाया : तुम इ़बादत का रुख़ करो और सिर्फ़ इसी में लगे रहो ह़त्ता कि तुम्हें इस के इ़लावा कोई काम न रहे। (حلیۃ الاولیاء، 10/121، رقم:14715)

﴾6﴿ वोह दूर हुवा जो **अल्लाह** पाक से दो चीज़ों की वज्ह से दूर हुवा और वोह क़रीब हुवा जो **अल्लाह** पाक से चार चीज़ों की वज्ह से क़रीब हुवा। जो दो चीज़ों की वज्ह से **अल्लाह** पाक से दूर हुवा वोह दो चीज़ें येह हैं : ❀ फ़र्ज़ को ज़ाएअ़ कर के नफ़्ल में पड़ना ❀ ज़ाहिरी आ'ज़ा का ऐसा अ़मल जिस पर दिल की सच्चाई न हो। और वोह चार चीज़ें जिन के सबब **अल्लाह** पाक के क़रीब होते हैं वोह येह हैं : ❀ **अल्लाह** पाक के दर को लाज़िम पकड़ना ❀ इ़बादत पर कमर बस्ता रहना ❀ तकालीफ़ पर सब्र करना और ❀ अपनी बड़ाई बयान करने से बचना। (حلیۃ الاولیاء، 10/121، رقم:14722)

﴾7﴿ जो **अल्लाह** पाक से मुनाजात में मश्ग़ूल होता है **अल्लाह** पाक उसे अपने ज़िक्र की मिठास और शैत़ानी वस्वसों की कड़वाहट अ़त़ा फ़रमाता है। (حلیۃ الاولیاء، 10/121، رقم:14734)

﴾8﴿ पांच अश्या सब से बेहतरीन हैं : ❀ गुनाहों पर रोना ❀ ऐ़बों की इस्लाह़ करना ❀ बहुत ग़ैब जानने वाले परवर्दगार की इत़ाअ़त करना

❀ दिलों से ज़ंग दूर करना और ❀ अपनी ख़्वाहिशात को ख़ुद पर सुवार न करना (या'नी ख़्वाहिशात की पैरवी से बचना)। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14749)

《9》 पांच चीज़ें ऐसी हैं जिन के होते हुए दिल में दूसरी कोई चीज़ नहीं ठहरती : ❀ **अल्लाह** पाक ही का ख़ौफ़ रखना ❀ **अल्लाह** पाक से ही उम्मीद रखना ❀ **अल्लाह** पाक ही से मह़ब्बत रखना ❀ **अल्लाह** पाक से ही ह़या करना ❀ **अल्लाह** से ही उन्सियत (मह़ब्बत) रखना।

(حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14749)

《10》 ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने देखा है कि फ़वाइद रात की तारीकी में (इ़बादत करने से) ज़ाहिर होते हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जब मुझे फ़ाएदा पहुंचाना चाहते तो मुझ से सुवाल करते। एक दिन मुझ से फ़रमाया : शुक्र क्या है ? मैं ने कहा : ने'मत में ना फ़रमानी न की जाए। फ़रमाया : तुम ने बहुत अच्छी बात कही और बेहतरीन जवाब दिया।

(حلیۃ الاولیاء،10/123،رقم:14717)

《11》 सब्र का मा'ना येह है कि तू ज़मीन की त़रह़ हो जाए जो पहाड़ों और आदमियों को उठाए हुए है और ज़मीन इस बोझ का न इन्कार करती है और न इसे मुसीबत समझती है बल्कि इसे अपने मौला की ने'मत और अ़त़िय्या कहती है। (حلیۃ الاولیاء،10/124،رقم:14723)

《12》 न लोगों के लिये कोई अ़मल करो, न उन के लिये कुछ छोड़ो और न उन के लिये कोई चीज़ खोलो। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इन के इस फ़रमान से मुराद येह है कि तुम्हारे आ'माल सब के सब **अल्लाह** पाक के लिये हों। (حلیۃ الاولیاء،10/130،رقم:14758)

﴾13﴿ मुझे उस पर हैरत है जो सुब्ह़ो शाम नफ़्अ़ की तलाश में जाता है लेकिन अपने नफ़्स के बारे में कभी नफ़्अ़ नहीं उठाता। (حلیۃ الاولیاء، 10/122، رقم:14706)

﴾14﴿ नफ़्स (की इस्लाह़) की मसरूफ़िय्यत ऐसी है जो लोगों से तवज्जोह हटा देती है। (حلیۃ الاولیاء، 10/122، رقم:14709)

﴾15﴿ सब से बड़ी त़ाक़त येह है कि तू अपने नफ़्स पर क़ाबू कर ले, जो अपने नफ़्स की इस्लाह़ न कर सके वोह दूसरों की इस्लाह़ भी नहीं कर सकेगा।

﴾16﴿ जो अपने से ऊपर वाले की इत़ाअ़त करता है तो नीचे वाला भी उस की इत़ाअ़त करता है।

﴾17﴿ अपने भाई से शक की बुन्याद पर क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ न करो और उसे राज़ी रखो।

अल्लाह पाक की पहचान की अ़लामत येह है कि **अल्लाह** के हुक़ूक़ को अदा करना और जहां तक हो सके इसे अपनी ज़ात पर तरजीह़ देना।

(حلیۃ الاولیاء، 10/128، رقم:14749)

﴾18﴿ आदमी उस वक़्त तक क़ाबिले ता'रीफ़ नहीं होता जब तक वोह अपने दीन को अपनी ख़्वाहिश पर तरजीह़ न दे और उस वक़्त तक हलाक नहीं होता जब तक अपनी ख़्वाहिश को अपने दीन पर तरजीह़ न दे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/129، رقم:14750)

﴾19﴿ पांच बातों के सिवा सारी दुन्या फ़ुज़ूल है : ❀ रोटी जो पेट भरे ❀ पानी जो प्यास बुझाए ❀ कपड़ा जो सत्र (शर्मगाह) छुपाए ❀ घर जिस में बन्दा रहे और ❀ इल्मे दीन जिसे वोह इस्ति'माल करे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/123، رقم:14719)

﴾20﴿ मख़्लूक़ से कुछ न त़लब करते हुए दुन्या से नफ़रत करने का नाम ज़ोह्द है।

﴾21﴿ दुन्या की त़रफ़ माइल न होना वरना **अल्लाह** पाक की जानिब से जो रस्सी है वोह मुन्क़त़ेअ़ हो जाएगी और ज़मीन पर अकड़ कर न चलना अ़न्क़रीब ज़मीन ही तेरी क़ब्र होगी। (حلیۃ الاولیاء،10/125،رقم:14728)

﴾22﴿ वोह धोके में है जिस ने अपनी ज़िन्दगी के अय्याम टाल मटोल में गुज़ारे और वोह भी धोके में है जो सालिह़ीन के मक़ाम की तमन्ना करे। (लेकिन कोशिश बिल्कुल न करे।) (حلیۃ الاولیاء،10/122،رقم:14710)

﴾23﴿ बन्दे का ईमान उस वक़्त तक कामिल नहीं होता जब तक उस में तीन ख़स्लतें न हों : ❀ जब वोह ग़ुस्से में हो तो उस का ग़ुस्सा उस को ह़क़ (बात) से न निकाले ❀ जब राज़ी हो तो उस की ख़ुशी उस को किसी गुनाह के काम में दाख़िल न करे ❀ जब (कोई) त़ाक़त वर हो तो वोह माल न ले जो उस का नहीं। (شعب الایمان،6/320، حدیث:8329)

﴾24﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले के लिये 10 मक़ामात हैं : ❀ ग़म त़ारी रहना ❀ रन्जो ग़म का ग़लबा ❀ बेचैन कर देने वाला ख़ौफ़ ❀ ज़ियादा रोना ❀ रात दिन गिड़गिड़ाना ❀ राह़तो आराम की जगहों से दूर भागना ❀ बे क़रारी की कसरत ❀ दिल का डरना ❀ ज़िन्दगी बे कैफ़ होना ❀ ग़म को छुपा कर उस की ह़िफ़ाज़त करना। (حلیۃ الاولیاء،10/121،رقم:14704)

﴾25﴿ काश! सारे आ़लम के दुख मुझे मिल जाते ताकि तमाम लोगों को ग़मों से रिहाई ह़ासिल हो जाती।

﴾26﴿ लोग जितना अपनी औलाद पर शफ़्क़त करते हैं उतनी शफ़्क़त अगर अपनी जानों पर करते तो उन्हें अपने अन्जाम में ख़ुशी मिलती। (حلیۃ الاولیاء،10/122،رقم:14707)

﴾27﴿ इस बात से बचो कि तुम्हारी ता'रीफ़ फैली हो और ऐ़ब छुपे हों। (حلیۃ الاولیاء، 10/122، رقم:14713)

﴾28﴿ ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ऐसा मुख़्तसर रास्ता जानता हूं जो तुम्हें जन्नत की त़रफ़ ले जाए। मैं ने कहा : वोह कौन सा रास्ता है ? फ़रमाया : न तुम किसी से कुछ लो, न किसी से कुछ मांगो और न तुम्हारे पास किसी को देने के लिये कुछ हो। (حلیۃ الاولیاء، 10/123، رقم:14716)

﴾29﴿ चार चीज़ें बन्दे को बुलन्द करती हैं : ❀ इ़ल्म ❀ अदब ❀ पाक दामनी और ❀ अमानत। (حلیۃ الاولیاء، 10/123، رقم:14720)

﴾30﴿ जो शख़्स ऐसे बात़िनी इ़ल्म का दा'वा करे जो ज़ाहिरी (शरई़) हुक्म को तोड़ता हो तो वोह ग़लत़ी करने वाला है। (حلیۃ الاولیاء، 10/125، رقم:14726)

﴾31﴿ जो **अल्लाह** पाक के मुक़र्रब हों उन के दिल तक़्दीरे इलाही में फ़िक्र मन्द रहते हैं जब कि आ़म नेक लोगों के दिल ख़ातिमे में लगे रहते हैं। आ़म नेक लोग कहते हैं कि हमारा ख़ातिमा कैसा होगा ? और मुक़र्रबीन (या'नी **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब पाने वाले) कहते हैं : मा'लूम नहीं **अल्लाह** पाक ने हमारे लिये क्या फ़ैसला फ़रमाया हुवा हो। (حلیۃ الاولیاء، 10/125، رقم:14730)

﴾32﴿ अ़मल में ख़ुलूस रखना यहां तक कि अ़मल ख़ालिस हो जाए येह अ़मल से भी ज़ियादा सख़्त है और अ़मल ख़ालिस होने के बा'द उसे बचाना अ़मल ख़ालिस होने से भी ज़ियादा सख़्त है। (حلیۃ الاولیاء، 10/125، رقم:14732)

﴾33﴿ अ़मल को आफ़ात से बचाना अ़मल करने से भी ज़ियादा मुश्किल है। (حلیۃ الاولیاء، 10/126، رقم:14733)

﴾34﴿ दोस्त बनाओ मगर उन्हें राज़दार न बनाओ, बुरे दोस्तों से बचो और जिस त़रह़ अपने दुश्मन के मुतअ़ल्लिक़ अन्देशा रखते हो इसी त़रह़ दोस्त के बारे में रखो। (حلیۃ الاولیاء،10/126،رقم:14735)

﴾35﴿ जो (नेकियों में) टाल मटोल से काम लेता है क़ियामत के दिन उसे बहुत ह़सरत होगी। (حلیۃ الاولیاء،10/126،رقم:14737)

﴾36﴿ ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया : भूका रहने वालों को भूक से क्या मिलता है ? फ़रमाया : पेट भरने वालों को पेट भरने से क्या मिलता है ? भूक वालों को भूका रहने से ह़िक्मत मिलती है और पेट भरने वालों को पेट भरने से बद हज़्मी का सामना होता है। (حلیۃ الاولیاء،10/126،رقم:14740)

﴾37﴿ तीन चीज़ें नेक लोगों के अख़्लाक़ में से हैं : ❀ फ़राइज़ की बजा आवरी ❀ ह़राम कामों से बचना और ❀ ग़फ़्लत न करना।

﴾38﴿ तीन चीज़ें नेक लोगों के अख़्लाक़ में से ऐसी हैं जिन से बन्दा **अल्लाह** पाक की रिज़ा तक पहुंच जाता है : ❀ इस्तिग़्फ़ार की कसरत ❀ आ़जिज़ी व इन्किसारी और ❀ सदक़ात की कसरत। (حلیۃ الاولیاء،10/127،رقم:14743)

﴾39﴿ जो ने'मतों की क़द्र नहीं जानता उस से ने'मतें छीन ली जाती हैं और उसे पता भी नहीं चलता, (सब्र करते करते) जिस पर मसाइब हलके हो जाते हैं वोह अपना सवाब जम्अ़ कर लेता है। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14746)

﴾40﴿ अपनी मोह़ताजी **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर दो वोह तुम्हें लोगों से बे परवा कर देगा। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14747)

﴾41﴿ अख़्लाक़ो आ़दात अ़क़्ल के तरजुमान हैं, तेरी ज़बान तेरे दिल की तरजुमान है और तेरा चेहरा तेरे दिल का आईना है क्यूं कि जो दिल में छुपा होता है वोह चेहरे से ज़ाहिर हो जाता है। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14748)

﴾42﴿ दिल तीन त़रह़ के हैं : ❀ पहाड़ की त़रह़ मज़्बूत़ जिसे कोई शै हटा नहीं सकती ❀ खजूर के दरख़्त की त़रह़ जिस की जड़ ज़मीन में क़ाइम है और हवा उसे हिलाती रहती है ❀ पर की त़रह़ जिसे हवा इधर उधर फेंकती रहती है। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14749)

﴾43﴿ बेहतरीन रिज़्क़ वोह है जो पांच चीज़ों से मह़फ़ूज़ हो : ❀ कमाने में गुनाहों से ❀ ज़िल्लत उठा कर और गिड़गिड़ा कर मांगने से ❀ अपने पेशे में धोका देही से ❀ आलाते गुनाह के पैसों से और ❀ ह़क़ तलफ़ी के मुआ़मले से। (حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14749)

﴾44﴿ शुब्हे वाली चीज़ों को छोड़ने वाला ही शह्वतों (बुरी ख़्वाहिशों) से बचने की त़ाक़त रख सकता है। (حلیۃ الاولیاء،10/129،رقم:14754)

﴾45﴿ जो भी मेरा ज़िक्र बुराई के साथ करे मैं उसे मुआ़फ़ करता हूं अलबत्ता मैं उसे मुआ़फ़ नहीं करूंगा जो जान बूझ कर मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई बात कहे जब कि वोह जानता भी हो मेरा अ़मल उस के ख़िलाफ़ है। (حلیۃ الاولیاء،10/130،رقم:14759)

﴾46﴿ ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन के क़ौलो फ़े'ल में तज़ाद (फ़र्क़) नहीं होता। (تذکرۃ الاولیاء،1/252)

﴾47﴿ जो शख़्स ने'मत की क़द्र नहीं करता उस को ऐसा ज़वाल आएगा कि उस को ख़बर भी नहीं होगी। (تذکرۃ الاولیاء،1/252)

﴾48﴿ ह़या और उन्स (मह़ब्बत) दिल के दरवाज़े पर आते हैं अगर दिल में ज़ोह्द और परहेज़ गारी को मौजूद पाते हैं तो ठहर जाते हैं वरना लौट जाते हैं। (تذکرۃ الاولیاء،1/252)

﴾49﴿ समझदार वोह है जो कुरआने पाक के असरार को समझता हो और उस में गौरो फ़िक्र करता हो । (تذکرۃ الاولیاء، 1/252)

﴾50﴿ जो शख़्स मख़्लूक़ में ख़ुद को ऐसा ज़ाहिर करे जैसा वोह नहीं है तो वोह **अल्लाह** पाक की नज़र से गिर जाता है । (شریف التواریخ، 1/512)

﴾51﴿ ताक़त वर वोह है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू पा ले । (شریف التواریخ، 1/512)

﴾52﴿ ताक़त वर वोह है जो अपने गुस्से पर ग़ालिब आ जाए । (شریف التواریخ، 1/512)

﴾53﴿ गुनाह से बचने के तीन अस्बाब हैं : ❀ दोज़ख़ के ख़ौफ़ की वज्ह से ❀ जन्नत के शौक़ की वज्ह से ❀ **अल्लाह** पाक से ह़या की वज्ह से । (تذکرۃ الاولیاء، 1/253)

﴾54﴿ जो **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार होता है तो सारी दुन्या उस की फ़रमां बरदार बन जाती है । (تذکرۃ الاولیاء، 1/252)

﴾55﴿ लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने की बजाए उन की त़रफ़ से मिलने वाली तक्लीफ़ पर सब्र करना अच्छा अख़्लाक़ है । (تذکرۃ الاولیاء، 1/252)

﴾56﴿ इबादात को ख़्वाहिशात पर तरजीह़ देने से इन्सान बुलन्दी पा लेता है । (تذکرۃ الاولیاء، 1/252)

﴾57﴿ आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "मख़्लूक़ में रहते हुए ख़ालिक़ से ग़ाफ़िल न होना । (تذکرۃ الاولیاء، 1/254)

الفاتحة
حضرة السيد الشيخ
السري السقطي (رضي الله عنه)

अपनी मोह़ताजी **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर दो वोह तुम्हें लोगों से बे परवा कर देगा।

(حلیۃ الاولیاء،10/128،رقم:14747)

जो (नेकियों में) टाल मटोल से काम लेता है क़ियामत के दिन उसे बहुत ह़सरत होगी। (حلیۃ الاولیاء،10/126،رقم:14737)

जो **अल्लाह** पाक का फ़रमांबरदार होता है तो सारी दुन्या उस की फ़रमांबरदार बन जाती है।

(تذکرۃ الاولیاء،1/252)